नाम	:	तेगबहादुर
बाणी	:	115 श्लोक
जन्म	:	सम्वत् 1678 ;अंग्रेजी वर्ष 1621द्ध अमृतसर
पिता	:	श्री हरगोबिन्द जी
माता	:	माता नानकी जी
पत्नी	:	माता गुजरी जी
पुत्रा	:	गुरु गोबिन्द सिंह जी
गुरुपद	:	1664 से 1675
ज्योति जोत	:	वर्ष 1675, चांदनी चौक दिल्ली
सृजना	:	श्री आनन्दपुर साहिब
प्रवास	:	सम्पूर्ण भारतवर्ष
बलिदान	:	कश्मीरी पंडितों के ध्र्मान्तरण के प्रश्न पर

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि,
प्रभ पुर कीआ पयान।
तेग बहादुर सी क्रिआ,
करी न किनहुं आन।।
तेग़ बहादर के चलत,
भयो जगत को सोक।।
है है है सभ जग भयो,
जै जै जै सुर लोक।।

– 'बचित्र नाटक' (गुरू गोबिन्द सिंह)

गुरू तेग बहादुर साहिब जी का जन्म वैसाख वदी 5 (पंचम् वैसाख) बिक्रम सम्वत 1678 (1 अप्रैल, 1621) को पवित्र शहर अमृतसर में 'गुरू का महल' नामक स्थान में हुआ था। उनके चार भाई – बाबा गुरदित्त जी, बाबा सूरज मल जी, बाबा अनी राय जी, बाबा अटल राय जी थे। और एक बहन बीबी वीरों जी थी। वो गुरू हरगोबिन्द साहिब और माता नानकी जी के पांचों पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र थे। उनके बचपन का नाम त्यागमल था। करतापुर में पैंडा खान के विरूद्ध युद्ध लड़ते हुए, तलवारबाजी के कौशल का प्रदर्शन करने के प्रकरण बाद गुरु हरगोबिन्द जी ने उन्हें तेग बहादुर का नाम दिया।

बचपन से ही गुरू तेगबहादुर अपना अधिकतर समय घर में बैठकर ही सिमरन, शबद् गुरु चिन्तन में बिताते थे। घर में धार्मिक वातावरण होने के कारण वे साहित्यिक सृजना में प्रवीण हो गए और बृजभाषा के उच्चकोटि के रचनाकार के रूप में सामने आए। आध्यात्मिक विचार धारा का प्रवाह उनके व्यक्तित्व से होता था। प्राकृतिक रूप से उनका मन दूसरों की सेवा और त्याग में ही लगता था।

6 वर्ष की आयु में उन्हें शिक्षण के लिए भेजा गया। उन्होने शास्त्रीय गायन एवं वाद्ययंत्रों के वादन को सीखा। भाई गुरदास जी ने उन्हें गुरबाणी एवं सनातन हिन्दू आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन करवाया। विद्यालय की शिक्षा के अलावा उन्हें सैन्य शिक्षा जैसे – घुड़सवारी, तलवारबाजी, भालाबाजी एवं निशाने बाजी भी सिखाई गयी। उन्होंने अमृतसर एवं करतारपुर का युद्ध देखा ही नहीं, बल्कि इसमें उनकी सहभागिता भी रही। परन्तु इन सब घटनाक्रमों के बावजूद उन्होने एक समयान्तराल में अन्तर्मुखी व्यवहार पैदा कर लिया था। गुरू तेग बहादुर साहिब जी का विवाह श्री लाल चन्द और बिशन कौर जी की पुत्री (माता) गुजरी जी से 15 आसू, सम्वत 1689 (14 सितम्बर, 1632) को करतारपुर में हुआ। उनके घर एक पुत्र (गुरू) गोबिन्द सिंह (साहिब) ने पोह सूदी सप्तमी सम्तम 1723 (22 दिसम्बर, 1666) को जन्म लिया। माता गुजरी भी एक धार्मिक नारी थी, वे व्यवहार से पक्की एवं खुले विचारों वाली नारी थी। उनके पिता बहुत ही रईस एवं दयालु व्यक्ति थे।

गुरू हरगोबिन्द साहिब की मृत्यू के बाद माता ननकी जी (गुरू तेग बहादुर जी की माता) उन्हें और उनकी पत्नी (गुजरी) को ब्यास नदी के किनारे बसे अपने पैतृक गांव बाबा बकाला ले आई। कुछ ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार भाई मेहरा, जो कि गुरू हरगोबिन्द साहिब जी के एक सिख भक्त थे, उन्होंने गुरू तेग बहादुर जी के लिए एक घर बनाया था। जिसमें गुरू साहिब ने अपने जिन्दगी के 20 वर्ष (1644 से 1666) पूर्ण शांति में बिताये।

गुरू तेग बहादुर साहिब जी के लम्बे समय तक प्रभु नाम सिमरन में तपकर दृढ़ हुए। इस सिमरन की बदौलत ही गुरू तेग बहादुर साहिब जी, गुरू नानक साहिब जी की क्रियात्मकता को देख पाये। उन्होंने नैतिक एवं आध्यात्मिक साहस से ईश्वर की इच्छा के अनुरूप अपने अन्दर दूसरों की सेवा और त्याग के विचारों को उत्पन्न किया। जब गुरू हरगोबिन्द साहिब ने हरराय साहिब को गुरू पदवी से नवाजा, तो गुरू तेगबहादुर साहिब जी उनके सामने माथा टेकने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया।

बाबा बकाला में निवास के समय गुरू तेग बहादुर साहिब जी ने बहुत से धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों, जिनमें – गोइन्दवाल, कीरतपुर साहिब, हरिद्वार, प्रयाग, मथूरा, आगरा, काशी और गया का प्रवास किया। गुरू हरगोबिन्द साहिब के सिख भक्त भाई जेठा जी गुरू तेग बहादुर साहिब को पटना लाये। यहा उन्होंने 6 अक्टूबर 1661 में गुरू हरराय साहिब की मृत्यु का समाचार सुन और निर्णय किया कि वो कीरतपुर साहिब वापिस लौटेंगे। वापिस आते समय वे 21 मार्च 1664 को दिल्ली पहुंचे, जहां उन्हें राजा जय सिंह के गुरू हरकिशन साहिब के आगमन का समाचार मिला। यहां वो अपनी माता और अन्य सिखों के साथ गुरू हरकिशन साहिब से मिलने गये एवं गुरू हर राय साहिब की मृत्यु पर शोक व्यक्त कर बाबा बकाला के लिए प्रस्थान किया।

कुछ दिनों के पश्चात, गुरू हरकिशन साहिब (उनकी मृत्यु की पूर्व संध्या पर) ने केवल दो शब्द ''बाबा बकाला'' बोले, यानि उनका उत्तराधिकारी बाबा बकाला में मिल जाएगा। इस घोषणा

के साथ ही बकाला गांव में लगभग 22 लोग गुरू साहिब के उत्तराधिकारी के रूप में उठ खड़े हुए। इनमें से जो सबसे ज्यादा प्रयास करने वालों में थे– बाबा धीर मल जी जो कि बाबा गुरदित्ता जी के सबसे बड़े पुत्र थे और जिनके पास गुरू अरजन साहिब द्वारा बनाई हुई गुरू ग्रन्थ साहिब की पहली बीड़ साहिब भी थी।

इस परिस्थिति ने सिखों को कुछ माह तक भ्रमित किया। तब अगस्त 1664 में दिल्ली के कुछ महत्वपूर्ण सिखों की सिख संगत बकाला पहुंची और बाबा तेग बहादुर को नौवें नानक के लिए स्वीकार किया। परन्तु बाबा बकाला का वातावरण जस का तस रहा। गुरू तेगबहादुर ने गुरूपद का उत्तराधिकार स्वीकार किया, परन्तु कभी भी किसी प्रकार स्पर्धा में उन्होंने अपने आपको नहीं डाला। गुरू साहिब उनसे दूर ही रहे।

एक बार झेहलम के टाण्डा (पाकिस्तान में) से एक बहुत ही रईस व्यापारी मक्खन शाह लुबाना, जो कि एक सिख भक्त था, गुरू साहिब को 500 स्वर्ण मोहरें भेंट चढाने के लिए बकाला आया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले उसका जहाज समुद्री तूफान में घिर गया था। परन्तु उसके द्वारा की गयी गुरू साहिब की प्रार्थना ने उसे बचा लिया। तब उसने गुरू साहिब को 500 स्वर्ण मुद्रायें भेंट करने का निर्णय लिया था। बकाला पहुंचते ही उसे बहुत से गुरूओं का सामना करना पड़ा। सभी अपने को सच्चा गुरू बता रहे थे। उसने उन सबको दो–दो सिक्के दिये एवं किसी ने भी उसे कुछ नहीं कहा। अपने आप को गुरू कहलाने वाले लोग दो दो स्वर्ण मुद्रायें लेकर खुश हो गये। परन्तु मक्खन शाह लुबाना को लगा कि यहां कुछ गलत चल रहा है। फिर उसे एक बार कुछ गांव वालों से पता चला कि यहां एक और गुरू, गुरू तेग बहादुर है। वो गुरू को देखने के लिए उनके घर पहुंचा जहां गुरू साहिब एकांत में ध्यान लगाकर बैठे हुए थे। जब उसने गुरू साहिब को दो स्वर्ण मुद्राये भेंट की, तो गुरू साहिब ने पूछा कि वो अपना वादा (500 स्वर्ण मुद्रायें भेंट करने का) क्यों तोड़ रहा है? इस पर मक्खन शाह अपनी खुशी पर काबू नहीं पा सका। वो तुरंत उसी घर की छत पर चढा और रो–रो कर चिल्लाने लगा ''गुरू लाधो रे... गुरू लाधो रे'' यानि कि उसने सच्चे गुरू को पा लिया है। यह सुनकर बड़ी संख्या में सिख भक्त वहां एकत्रित हुए और सच्चे गुरू के प्रति अपनी आस्था प्रगट की।

इस घटना ने धीर मल को आघात पहुंचाया और वो गुरू तेगबहादर साहिब पर आक्रमण करने के लिए कुछ गुण्डों के साथ वहां पहुंचा। नवम्बर 1664 में गुरू साहिब अपने संपूर्ण परिवार के साथ गुरू हरमन्दिर साहिब के दर्शनों के लिए अमृतसर गये परन्तु वहां के मंत्री ने गुरू साहिब को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया। गुरू तेग बहादुर साहिब ने इसका बलपूर्वक विरोध न करते हुए बाहर से ही दर्शन कर वल्लाह, खडूर साहिब, गोइन्दवाल, तरनतारन साहिब, खेमकरन होते हुए कीरतपुर साहिब पहुंचे। कीरतपुर पहुंचने से पहले वे तलवण्डी सबो, बागड़ और ढंढौर भी गये। यह नोट करने योग्य बात है कि जहां भी गुरू साहिब गये वहां उन्होंने नए प्रचार केन्द्रों को स्थापित किया। गुरू तेग बहादुर साहिब मई 1665 में कीरतपुर साहिब पहुंचे।

जून 1665 में गुरू तेग बहादुर जी ने बिलासपुर के राजा से सतलज नदी के किनारे मखोवाल गांव में कुछ जमीन खरीदी और वहां पर अपनी पूजनीय माता नानकी जी के नाम पर ''चक नानकी'' नाम के शहर की बुनियाद रखी। बाद में इस नगर का नाम श्री आनन्दपुर साहिब रख दिया गया।

इस नये नगर में कुछ समय बिताने के पश्चात गुरू साहिब ने राष्ट्रवादी सिख मत को मजबूत किया। नए उपदेश केन्द्रों की स्थापना तथा पुराने उपदेश केन्द्रों के जीर्णोत्थान करने के उद्धेश्य से पूर्व की ओर प्रस्थान किया। यह उनका द्वितीय धार्मिक प्रवास था। अगस्त 1665 को अपने परिवार के सदस्यों के अलावा कुछ सिख भक्तों, जिनमें भाई मती दास जी, भाई सतीदास जी, भाई संगतीय जी, भाई दयाला दास जी और भाई जेठाजी शामिल थे, के साथ आनन्दपुर साहिब से मानवता को दुखों से मुक्त करने के उद्देश्य से प्रवास आरम्भ किया। गुरू साहिब की संगतों में आशीर्वाद के लिए बढती लोगों की भीड़ ने मुगल शासकों के कान खड़े कर दिये। जब दिसम्बर 1665 में गुरू साहिब बांगड़ के धमधन क्षेत्र से आ रहे थे तो मुगल अधिकारी आलम खान रोहिला ने दिल्ली

सल्तनत के आदेश पर भाई सती दास जी, भाई मती दास जी, भाई दयाला दास जी और कुछ अन्य सिखों के साथ गुरू साहिब को गिरफ्तार कर लिया। इन सभी को बादशाह औरंगजेब के दरबार में पेश किया गया। जिन्होंने इन सभी को राजा जय सिंह मिर्जा के पुत्र कंवर राम सिंह कच्छवाहा को सौंपने का आदेश दिया। क्योंकि राजा जय सिंह मिर्जा का परिवार सिख धर्म का अनुयायी था, इसलिए उन्होने गुरू साहिब और अन्य सिखों को कैदियों के रूप में नहीं बल्कि मेहमानों के रूप में स्वागत किया और साथ ही बादशाह के दरबार से उन सब की रिहाई के आदेश भी पारित करवाये। गुरू साहिब को दो माह पश्चात छोड़ दिया गया। अपने धार्मिक प्रवास के क्रम को जारी रखते हुए गुरू साहिब मथुरा पहुंचे जहां से आगरा एवं इटावा, कानपुर, फतेहपुर होते हुए इलाहाबाद पहुंचे। वो बनारस और सासाराम का प्रवास करते हुए मई 1666 को पटना पहुंचे।

गुरू तेग बहादुर साहिब अक्टूबर 1666 में मुंगेर, कालीकट (कोलकता), साहिबगंज और कांत नगर होते हुए ढाका की तरफ अग्रसर हुए। परन्तु इन स्थानों की तरफ प्रवास से पहले उन्होंने माता पैदी नामक सिख महिला की बरसात व बाड़ में उसके परिवार सहित रक्षा की। उस समय माता गुजरी जी गर्भवती थी। सभी स्थानों पर गुरू जी रूकते, सत्संग करते और कीर्तनों का आयोजन किया जाता और धार्मिक उपदेश दिये जाते। बहुत से महत्वपूर्ण सिख जैसे भाई मती दास जी, भाई सती दास जी, भाई दयाला दास जी और बाबा गुरदित्ता जी ने गुरू साहिब को इन प्रवासों के दौरान महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

ढाका में गुरू साहिब ने सिख भक्तों अलमस्त जी और नत्था साहिब की मदद से हजूरी संगत की रचना की। जहां पर गुरू जी धार्मिक उपदेश दिया करते थे, वहां पर अब गुरूद्वारा संगत टोला है। यह वह स्थान है, जहां पर गुरू जी ने पुत्र रत्न (गुरू गोबिन्द साहिब) के जन्म का संदेश सुना था। जिनका जन्म पोह सूदी सप्तमी (23 पोह) बिक्रम सम्वत 1723, (22 दिसम्बर, 1666) को पटना में हुआ था। ढाका से गुरू साहिब ने जातिया पहाड़ियों और शिलहट के लिए प्रस्थान किया, जहां उन्होने सिखों के लिए उपदेश केन्द्रों को स्थापित किया और अगरतला होते हुए चिटगोंग पहुंचे।

गुरू साहिब 1668 में ढाका वापिस पहुंचे। इस समय स्वर्गीय राजा जय सिंह का पुत्र राजा राम सिंह, जो कि ढाका में पहले से असम कूच के लिए तैयारियां कर रहा था, गुरू साहिब से सफलता के लिए आशीर्वाद लेने आया। (कुछ ऐतिहासिक दस्तावेज कहते हैं कि राजा राम सिंह गुरू जी से गया में मिला था।) क्योंकि गुरू जी स्वयं भी पूर्ववर्ती राज्यों का दौरा कर रहे थे तो राजा राम सिंह ने उनसे आग्रह किया कि वो उसके साथ चलें, और गुरू साहिब ने उसका आग्रह मान लिया। असम में ब्रहमपुत्र नदी के किनारे स्थिति ढुब्री में गुरू संगत ने नाम सिमरन व गुरु शबद् चिन्तन में भाग लिया। जहां आज दमदमा साहिब नामक गुरूद्वारा स्थित है। इससे पहले गुरू नानक साहिब ने भी इसी जगह का प्रवास किया था। **गुरू तेग बहादुर साहिब जी की बदौलत राजा राम सिंह और कामरूप के शासक के बीच एक शांतिपूर्ण समझौता हो गया। गुरू साहिब ने 1670 में असम को छोड़ पटना के लिए कूच किया।**

भारत में हिन्दुओं पर मुस्लिम जेहादी मजहबी राज्य का प्रकोप जारी था। औरंगजेब के शासन में हिन्दुओं का कत्ले–आम एक आम बात थी। औरंगजेब ने भारत से हिन्दूत्व को जड़ से मिटाने का मन बना लिया था और इसके लिए उसने कई योजनाओं पर अमल करना प्रारम्भ कर दिया था, जैसे – हिन्दू व्यापारियों पर कर, गैर मुस्लिमों पर धार्मिक कर (जजिया कर) आदि क्रियान्वित किये। दिवाली और होली जैसे त्योहारों पर पाबंदी लगा दी गयी। उसने बहुत से पवित्र और महत्वपूर्ण मंदिरों को ध्वस्त करवाया और उनके स्थान पर मस्जिदों का निर्माण करवाया। ऐतिहासिक दस्तावेज कहते हैं कि उसने कुछ गुरूद्वारों को भी तुड़वाया।

गुरू तेग बहादुर ने जब औरंगजेब की इन करतूतों के बारे में सुना तो उन्होने पंजाब की ओर रूख किया। जून 1670 में बहुत से सिख भक्तों के साथ उन्हें आगरा में गिरफ्तार कर लिया गया।

उन्हें दिल्ली के शाही दरबार में पेश किया गया परन्तु जल्द ही उन्हें छोड़ दिया गया। फरवरी 1671 में गुरू साहिब आनन्दपुर साहिब लौट आये। उन्होने वहां पर सिख धर्म का उपदेश देते हुए शांतिपूर्ण दो वर्ष बिताये। यहां पर उनका परिचय आम जनता के दुखों से हुआ।

1672 में, गुरू साहिब पंजाब के मालवा क्षेत्र की ओर एक और धार्मिक प्रवास पर निकल पड़े। यह क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ हुआ था। परन्तु यहां के लोग परिश्रमी, व गरीब थे। यह लोग पीने के पानी, दूध, शिक्षा एवं साधारण खाद्य सामग्री जैसी आधारभूत सुविधाओं से भी वंचित थे। गुरू साहिब ने इस क्षेत्र में लगभग ढाई वर्ष तक प्रवास किया।

उन्होंने गांव वालों की बहुत प्रकार से मदद की। गुरू साहिब और सिख संगतों ने गांव वालों को बंजर भूमि में वृक्षारोपण में सहायता की। गांव वालों को दुग्ध उत्पादन के प्रेरित किया गया और कई भूमिहीन गरीब किसानों को गुरू जी द्वारा मुफ्त में दूधारू गायों को बांटा गया। पीने के पानी की समस्या से निजात पाने के लिए गुरू साहिब के आहवान पर कार सेवा कर बहुत से कुंओं को भी खुदवाया गया। इस प्रकार गुरू साहिब ने सामान्यजन के बीच में सामन्य बनकर महत्वपूर्ण कार्य किये। इस सब के दौरान बहुत से सखी सरबर (मुस्लिम धर्म) के अनुयायी सिख धर्म की ओर आकृषित हुए। गुरू साहिब के प्रवासों के मुख्य एवं महत्वपूर्ण पड़ाव पाटियाला (दुखनिवारण साहिब), समों, भीकी, तहला साहिब, और भटिण्डा में तलवण्डी, गोइन्दवाल, मकरोड़ा, बांगर और धमधन में हुआ। डेढ वर्ष तक इन स्थलों का प्रवास करने के पश्चात गुरू साहिब 1675 में आनन्दपुर साहिब लौटे।

इन धार्मिक प्रवासों और समाज सेवा कार्यों ने मुस्लिम कट्टरपंथियों के कान खड़े कर दिये, और उनके मन में एक डर पैदा कर दिया। दूसरी तरफ मुगल शासन के गुप्तचरों ने गुरू तेग बहादुर साहिब जी की धार्मिक गतिविधियों की सूचना बढा चढा कर मुगल शासक को भेज दी।

जैसा कि यह पहले इंगित किया जा चुका है कि भारत को मुस्लिम मजहबी राज्य बनाने के लिए हिन्दुओं को बलपूर्वक धर्मांतरित किया जा रहा था और इस लक्ष्य को जल्द से जल्द पाने के लिए काशी, प्रयाग, कुरूक्षेत्र, हरिद्वार और कश्मीर के ब्राहमणों को इस कार्य के लिए चुना जा रहा था। उन पर हर प्रकार के जुल्म किये जा रहे थे। उन्होंने एक फतवा जारी किया कि या तो इस्लाम को कबूल करो या मौत के लिये तैयार हो जाओ। यह एक बहुत ही खेद का विषय था कि यह सब उन बहादुर कहे जाने वाले राजपूत राजाओं और मुखियाओं की नाक के नीचे हो रहा था, जो कि उसी मुगल शासन का एक हिस्सा थे। अपनी तरफ ही निशाना साधे हुए वो मूक दर्शक बने रहे। उन्होने औरंगजेब की इस क्रूर हरकत के खिलाफ एक छोटी सी आवाज भी नहीं उठाई। भारत में बड़ी संख्या में धर्मांतरण किया जा रहा था और शेर अफगान खान जो कि कश्मीर में मुगल शासन का प्रशासक था, इस कार्य को करने वाला पहला मुगल अधिकारी था। हजारों कश्मीरी पंडितों को मार दिया गया और उनकी संपत्तियों को लूट लिया गया। हजारों कश्मीरी स्त्रियों को अगवा किया गया, बलात्कार किया गया और उनकी दुर्दशा हुई।

1675 में पंडित कृपा राम दत्त की अगुवाई में कश्मीरी पंडितों का एक दल गुरू तेग बहादुर साहिब से मदद मांगने श्री आनन्दपुर साहिब आया। उन्होंने गुरू साहिब जी के समक्ष अपने दुखों व पीड़ा को रखा। सांस्कृतिक आक्रमण का विस्तृत ब्यौरा पेश किया। गुरू साहिब ने उनके विचारों को सुना और औरंगजेब के इस कुकृत्य को बलपूर्वक न करते हुए शांतिपूर्ण ढंग से करने का विचार व्यक्त किया। धर्म की स्वतंत्रता, बहुविचारी हिन्द भारतीय समाज का संरक्षण और सत्य के लिए गुरू साहिब ने विचार विमर्श किया। गहन सोच में डूबे गुरु तेगबहादुर जी से पुत्र गोबिन्द राय ने पूछा कि चिन्ता का कारण क्या है। तो गुरु साहिब ने अपने पुत्र को पूरा विषय समझाया। तब बाल गोबिन्द राय जी ने पूछा कि इस समस्या का हल क्या होगा। तो गुरू तेगबहादुर जी ने कहा कि अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए किसी संत महापुरुष के बलिदान से ही इस जेहादी अंधड़ से छुटकारा मिल पाएगा। इस पर बाल गोबिन्द राय जी ने कहा कि ''पिताजी! आप से बड़ा संत महापुरुष इस कार्य के लिए और कौन हो सकता है?'' गुरु तेगबहादुर जी ने सार्वजनिक रूप से ऐलान किया और मुगल औरंगजेब तक इस बात को पहुंचाया भी कि यदि वे गुरु तेगबहादुर जी

को कलमा पढ़वा कर, जबर से मुसलमान बनवा लेंगे, तो सभी कश्मीरी पंडित मुसलमान बन जाएंगे। आनन्दपुर साहिब में गुरू साहिब ने 1675 में अपने पुत्र गुरू गोबिन्द सिंह दसवें नानक के रूप में स्थापित कर दिल्ली की ओर यात्रा आरम्भ कर दी थी। गुरु तेगबहादुर जी ने रास्ते–रास्ते पर जन–जागरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। जब गुरू तेग बहादुर साहिब आगरा के समीप पहुंचे तो मिर्जा नूर मोहम्मद खान ने गुरू साहिब और उनके तीन सिखों–भाई मतिदास, भाई सतिदास, भाई दयालाजी को गिरफ्तार कर लिया। उसने उन्हें लालकिले में बन्द कर दिया और रोज यातनायें देने लगा। इस्लाम कबूल करवाने, काफिरों को दण्ड देने और जेहादी मनसूंबों को पूरा करने के क्रम में भाई मतिदास जी को गुरुजी के सामने ही आरे से चिरवा दिया गया। भाई सतिदास जी को रूई से बांधकर आग के हवाले कर दिया गया। भाई दयाला जी को देग में उबाल दिया गया। यह सब बहुविचारी समाज को एक विचारी इस्लामी समाज में परिवर्तित करने के लिए किया गया। ये सभी कुकृत्य कुरान, शरिया कानून की रोशनी में किया गया।

अब गुरू साहिब की बारी थी, जो की शांत एवं चुप थे। उसने गुरू जी को तीन विकल्प दिये – 1. कोई चमत्कार दिखाओ 2. इस्लाम कबूल करो या 3. मौत के लिए तैयार हो जाओ। गुरू साहिब ने अंतिम विकल्प का चुनाव किया। गुरू साहिब को अटल देखते हुए शासन ने जल्लाद को हुक्म दिया कि वो उनका सिर धड़ से अलग कर दे। हुक्म की तामील हुई। इतिहासकार इसे 11 नवम्बर, 1675 की घटना मानते हैं। दिल्ली के चांदनी चौक में सरेआम, हजारों की मौजूदगी में औरंगजेब के आदेश पर, काजी–मुल्लाओं के क्रियान्वयन के बाद जल्लादों द्वारा गुरु तेगबहादुर जी का शीश देह से अलग कर दिया गया। इस कुकृत्य के बाद एक जोरदार तूफान आया। इसने शहर के लोगों में हलचल पैदा कर दी। इन परिस्थितियों में भाई जेठा जी गुरू साहिब के पावन शीश को एक टोकरी में सावधानी पूर्वक रखकर श्री आनन्दपुर साहिब लाये। वो 15 नवम्बर को आनन्दपुर साहिब के निकट कीरतपुर साहिब पहुंचे। उनका सम्मान पूर्वक स्वागत किया गया और गुरू गोबिन्द राय ने उन्हें ''रंगरेटा गुरू का बेटा'' नाम से सम्मानित किया। सिर का अंतिम संस्कार पूरे सम्मान के साथ किया गया और अगले दिन बाकी संस्कार किये गये। इस परिस्थिति का लाभ उठाते हुए गुरू तेगबहादुर जी के शरीर के दूसरे हिस्से को एक बहादुर सिख बाबा लक्खी शाह बंजारा एक प्रसिद्ध बंजारा व्यापारी और ठेकेदार, अपने साथ ले गया और उसने तुरंत अपने घर के अन्दर लकड़ियां इकट्ठी कर शाम के समय अग्नि भेंट कर दी। इस प्रकार कीमती वस्तुओं के साथ पूरा घर जल कर राख हो गया। अब इस स्थान पर गुरूद्वारा रकाबगंज है।

गुरू साहिब की शहादत ने भारत के इतिहास को बहुत प्रभावित किया है। इस घटना ने मुगल शासन के बुनियादी मजहबी व्यक्तित्व को भारत की जनता के सम्मुख बेपर्दा किया और उनके द्वारा किये जा रहे अन्याय और जुल्मों को प्रदर्शित कर, भारतीय जनों को जागृत किया। इससे उन्हें एहसास हो गया कि वो केवल शस्त्र से ही अपने धर्म की रक्षा कर सकते हैं। इस घटना ने खालसा सृजना के लिए उर्वरा भूमि तैयार की। यह भारतीय इतिहास की महानतम घटनाओं में से एक है। इस घटना से भारत राष्ट्र की अवधारणा को बल मिलता है। इस घटना से गुरु महाराज के विशाल दृष्टिकोण का साक्षात्कार भी होता है।

पं. जवाहर लाल नेहरू कश्मीरी पण्डितों के सामाजिक समूह से आए थे। अपने पूर्वजों से प्रेम स्वभाविक होता है। इस दृष्टिकोण से पण्डित नेहरू को गुरु तेगबहादुर जी का कृतज्ञ होना चाहिए। लेकिन इतिहास की पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' लिखते समय, मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण उन्हें गुरु तेगबहादुर जी के बारे में लिखना ठीक नहीं समझा। ईरान को इस्लामी होते केवल 20 वर्ष लगे। आज भारत ने अपना स्वरूप बनाए रखा है, तो इसके पीछे पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी और नवम् तेगबहादुर जी के महान बलिदान भी कारण है। लेकिन यह अफसोस का विषय है कि देश की जनसंख्या के एक बड़े भाग को या तो ज्ञान नहीं है, ज्ञान है तो संवेदनहीनता है, या कोई जातिगत अथवा पंथिक कारणों से उन्हें गुरु साहिबान के विषय ठीक नहीं लगते।

गुरू साहिब एक महान कवि और चिन्तक थे। वे कहते हैं –

''भाई काहू काउ देत नैह, नैह भाई मन्नत अन्न,
काहू नानक सुनु रे माना, ज्ञानी ताही बखान।।

(–श्री गुरू ग्रन्थ साहिब 1427)

गुरू साहिब ने 15 रागों में गुरबाणियों के अलावा 57 श्लोक, जो कि श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में गुरू गोबिन्द साहिब द्वारा उल्लिखित किये गये लिखे।